International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(III), January - March, 2022, pp.104-107

कृषि क्षेत्र की आर्थिक समस्यायें एवं उभरती चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (भोपाल संभाग के विशेष संदर्भ में)

लखन लाल चौकसे*

सार

प्रस्तुत शोध–पत्र में कृषि क्षेत्र की आर्थिक समस्यायें एवं उभरती चुनौतियों पर प्रकाश डाला जाए। प्रगति के सुनहरे अतीत पर खडा भारतीय कृषि क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था में सदैव ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। भारत में विश्व का 10 वॉ सबसे बडा कृषि योग्य भू–संसाधन मौजूद है। वर्ष 2011 की कृषि जनगणना के अनुसार, देश की कुल जनसंख्या का 61ण्5 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण भारत में निवास करता है और कृषि पर निर्भर है। उक्त तथ्य भारत में कृषि के महत्व को भलीभॉति स्पष्ट करते है। वर्ष 2019 में देश के कृषि क्षेत्र मे कई प्रकार के हस्तक्षेप और व्यवधान देखे गए। वर्ष 2019 के पहले हिस्से में 75000 करोड रुपए के निवेश के साथ प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN) योजना की शुरुआत की गई। हालाकि वर्ष 2019 का दूसरा हिस्सा इस क्षेत्र के लिये आपदा के रुप में सामने आया और देश के कई हिस्सों में सूखे और बाढ की घटनाएॅ देखी गई। इसके अलावा आर्थिक मंदी और सब्जियों खासकर प्याज तथा दालों की कीमतों में वृद्धि ने उपभोक्ताओं (जिसमें किसान भी शामिल हैं) पर बोझ को और अधिक बढा दिया। यह स्थिति मुख्यतः दो तथ्यों को स्पष्ट करती है :लोकलुभावन उपायों औंर प्रयासों का अर्थव्यवस्था पर कुछ खास प्रभाव नहीं पड रहा है और जलवायु–प्रेरित आपदाओं की भेधता (vulnerability) को कम करने के कई उपायों के बावजूद कृषि क्षेत्र और किसानों को नुकसान हो रहा है। इस प्रकार कृषि क्षेत्र को बढावा देने के लिये आवश्यक है कि नीति निर्माण के समय अतीत के अनुभवों को ध्यान में रखा जाए और मौजूदा अवसरों का यथासंभव लाभ उठाया जाए।

शब्दकोशः *अर्थव्यवस्था, कृषि, समस्यायें, चुनौतियों, ग्रामीण जनसंख्या ।*

प्रस्तावना

भोपाल संभाग में कृषि, ग्रामीण जनसंख्या का जीविकोपार्जन का मुख्य साधन है। कृषि क्षेत्र का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान बढती हुई जनसंख्या के लिए प्र्याप्त मात्रा में खाघ–सामग्री उपलब्ध कराना है। वर्तमान में कृषि क्षेत्र में बढती हुई लागत के कारण धन की आवश्यकता समय –समय पर पडती ही रहती है। कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिए आवश्यक है कि कृषक आधुनिक ढंग से खेती करे ताकि कृषकों की आय में वृद्धि संभव हो सकें कृषि क्षेत्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का आधार है, वर्तमान में अनेक समस्याओं एवं चुनौतियों से घिरा हुआ है। कृषि मानसून का जुआ होने के कारण बाढ, सूखा, तूफान, ओलावृष्टि जैसी प्राकृतिक आपदाओं का संकट कृषकों पर प्रतिवर्ष मंडराता ही रहता है। प्राकृतिक कहर के कारण कृषि अब घाटे काा व्यवसाय बनता जा रहा है। कृषि व्यवसाय से आय प्राप्त करने के उद्देश्य से खेती करते है। किन्तु बढती हुई लागत एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण कुछ समय में ही कृषक का धन एवं श्रम का नाश हो जाता है । अब कृषि जीवन यापन का आधार नहीं बल्कि चुनौतीपूर्ण जोखिम भरा व्यवसाय बन चुका है। ऐसी स्थिति मे किसान न केवल निर्धन है बल्कि चिंताजनक तथ्य यह है कि ऋणग्रस्त कृषकों में आत्महत्या जैसी घटनायें भी बढ रही है । अध्ययन में कृषि क्षेत्र में उत्पन्न आर्थिक समस्याओं एवं चुनौतियों का अध्ययन कर इसके समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गये है।

* शोधार्थी, वाणिज्य अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविघालय, उज्जैन, म.प्र.।

शोध पत्र का साहित्य पुनरावलोकन

त्रिवेदी आर. एन. (2012)– भारतीय कृषि एवं कृषक विकास उत्पादन समस्या इस लेखक ने भारतीय कृषि व्यवस्था सहित कृषकों की समस्याओं को समाज के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। भारतीय कृषक आज भी उत्पादन के वावजूद अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है।

पाठक ऋणेतोश (2013)– सिंचाई के परम्परागत साधनों को विकसित करने के साथ ही नई तकनीकी को लागू करने पर ध्यान दिया गया है। नहरों के कार्यों को पूर्ण करने के लिए प्र्याप्त बजट की व्यवस्था की गई है।

सिंह ब्रजभूषण (2015)– ब्रजभूषण सिंह ने कृषि अर्थव्यवस्था में कृषि को सर्वोपरि योगदान बताया है। और कृषि में बढते हुए रोजगारों की संभावना से अवगत कराया है।

अध्ययन के उद्देश्य

- कृषि क्षेत्र की आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करना।
- कृषि क्षेत्र में उत्पन्न चुनौतियों का मूल्यांकन कर सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि एवं समंको का संकलन

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक समंकों पर आधारित हैं जिसमें समग्र रूप से अध्ययन क्षेत्र भोपाल संभाग लिया गया है। द्वतीय समंक प्रकाशित पुस्तकों,जर्नल एवं इंटरनेट के माध्यम से संकलित किये गये हैं। विश्लेषण, व्याख्या एवं तुलनात्मक अध्ययन विधि द्वार उद्देश्यों का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाले गयें हैं।

विश्लेषण

कृषकों की साख संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति पर्याप्त मात्रा में पूरी नही हो पाती है। कृषकों को मजबूर होकर साहूकारों की शरण में जाना पडता है। साहूकार कृषकों को बहुत ऊंची ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराते है। कृषकों का शोषण साहूकारें द्वारा किया जाता है। जिसका कृषकों की आर्थिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव पडता है। ऐसी स्थिति में कृषकों को ऋणग्रस्तता से मुक्त कराने के लिए समय समय पर सरकार द्वारा अनेक योजनाओं एवं कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। कृषकों को साहूकारों के शोषण से बचाने के लिए सरकार कम ब्याज दर पर कृषकों को कृषि ऋण उपलब्ध करा रही है।

कृषक को ऋण की आवश्यकता इसलिए होती है क्योंकि वह स्वयं गरीब तथा उसके आय के स्त्रोत अत्यन्त कम होते है। कृषि मानसून पर निर्भर होने के कारण यदि कृषको की फसल खराब हो जाती है, तो वह ऋणग्रस्त हो जाता है। उसे अपने जीवन यापन एवं कृषि कार्य के लिए ऋण की आवश्कता पडती है। इसका मुख्य कारण यह है कि कृषकों को केवल इतनी आय प्राप्त होती है जिससे वह केवल अपना जीवन यापन कर सकें। सरकार ने मानसून की अनिश्चितता के कारण कृषकों को होने वाले नुकसान से बचाने के लिए फसल बीमा योजना के तहत भोपाल संभाग में खरीफ 2015 में करीब पौने पॉच लाख किसानों को 1252 करोड रुपए से ज्यादा की बीमा राशि बॉटी गई। सीहोर में बीमा राशि पाने वाले किसानों की संख्या कुल किसानों से 30 फीसदी है, लेकिन उन्हें मिलने वाली राशि कुल वितरित राशि का 35 फीसदी है। भोपाल संभाग में 2015 में 4 लाख 74 हजार 977 किसानों को खरीफ फसल का बीमा बॉटा गया। इन्हें 1252 करोड 37 लाख रुपए से ज्यादा की राशि दी गई। संभाग के सीहोर जिले के एक लाख 45 हजार 288 किसानों को 2015 खरीफ में 443 करोड रुपए की बीमा राशि दी गई। संभाग के पौने पॉच लाख किसानों को 30 फीसदी सीहोर के किसानों कुल वितरित बीमा राशि 1252 करोड की 35 फीसदी बांटी गई। खरीफ 2015 में भोपाल जिले के 32400 किसानों को 6838 लाख रुपए, रायसेन जिले में 55325 किसानों को 172 करोड, राजगड के एक लाख 33 हजार 868 किसानों को 257 करोड रुपए और विदिशा के एक लाख आठ हजार 96 किसानों को 310 करोड रुपए बीमा राशि बांटी गई है। इन राशियों के वितरण से कृषक कृषि कार्य हेतु प्रोत्साहित हो रहे है। किन्तु कृषि एवं कृषकों के उत्थान के लिए किए गए ये सभी उपाय अत्यंत अल्प साबित हो रह है।

भोपाल संभाग में जहां कृषि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कृषि कार्य जो जीवन यापन करने का आधार है। सामाजिक–आर्थिक प्रतिष्ठा से वंचित है। यही कारण है कि वर्तमान में युवा कृषक कृषि कार्य में रुचि नहीं रखते जबकि कृषि कार्य की जगह अन्य व्यवसाय को करना पसन्द करते है क्योंकि कृषि व्यवसाय में अत्यन्त अल्प आय प्राप्त होती है साथ ही प्राकृतिक आपदाओं के कारण निरन्तर घाटे की स्थिति बनी रहती है। यह चिन्ताजनक तथ्य है कि एक और तेजी से जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हो रही है, वही दूसरी ओर हमारे कृषक लागत की तुलना में कम आय प्राप्त होने के कारण अन्य व्यवसाय करने को मजबूर हो रहे है। साथ ही निर्धन किसान कृषि कार्य हेतु ऋण लेते है किन्तु मानसून के कारण फसल नष्ट होने के कारण ऋणग्रस्त हो जाते है। ऋणग्रस्तता की स्थिति में गंभीर चुनौतियों से जूझने के कारण कृषकों में आत्महत्या जैसी प्रवृत्ति भी बढने लगी है। यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि जो कृषि आधी से अधिक ग्रामीण जनसंख्या को रोजगार प्रदान करती है उस कृषि क्षेत्र की गणना इस रुप में कैसे संभव है। कृषि क्षेत्र को अब वर्तमान में आर्थिक प्रगति का सूचक नहीं माना जाता। आज कृषकों के सामने सबसे वढी चुनौती यह है की जितनी लागत लगाकर पृथक खेती करते है। उत्पादन के विक्रय से उचित आय प्राप्त नहीं हो पाती।

प्रभाव

देश के कृषि क्षेत्र में विघमान विभिन्न चुनौतियों और समस्याओं के परिणामस्वरुप किसान परिवारों की आय में कमी होती हैं और वे ऋण के बोझ तले दबे चले जाते है। अंततः उनके समझ आत्महत्या करने के सिवाय कोई विकल्प नहीं बचता।

निम्न और अत्यधिक जोखिम वाली कृषि आय कृषकों की रुचि पर हानिकारक प्रभाव डालती है और वे खेती को छोडने के लिए मजबूर हो जाते है।

इस देश में खाघ सुरक्षा और कृषि के भविष्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पडता है।

कृषि क्षेत्र में उत्पन्न चुनौतियों को दूर करने हेतू सुझाव

- **सिंचाई साधनों का विकास एवं विस्तार–** कृषि पूर्णरुप से मानसून पर आधारित है। अतः सरकार द्वारा सिंचाई के साधनों को बढाने का प्रयत्न करना अति आवश्यक है। सिंचाई की विभिन्न योजनाओं का उचित विकास किया जाना चाहिए।
- **वित्त की सुविधाओं में सुधार –** कृषि क्षेत्र में आधुनिक तकनीक को प्रोत्साहन देने हेतु कृषकों को आवश्यकतानुसार उचित एवं पर्याप्त मात्रा में वित सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिए। जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि सम्भव हो सके।
- **कृषि विपणन की सुविधाएँ–** किसानों को कृषि उत्पादन का उचित मूल्य प्राप्त होना आवश्यक है। जब कृषकों को कृषि उत्पादन की विक्रय से उचित मूल्य प्राप्त होगा। तब कृषक अधिक लगन से कृषि कार्य करने हेतु प्रेरित हो गए। इसके लिए अधिक मात्रा में विपणन समितियॉ एवं मणियों की स्थावपा की जानी चाहिए।
- **उन्नत बीजों का उपयोग –** उन्नत बीजों के माध्यम से कृषि उत्पादन में वृद्धि सम्भव होती है। कृषकों को उन्नत,बीच,खाद,रासायनिक खाद आदि का ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
- **भूमि सुधार –** कृषि उत्पादन में वृद्धि करने हेतु आवश्यक है कि संभाग में भी भूमि सुधार कानूनों को प्रभावशाली ढंग से लागू किया जाना चाहिए। जिससे भूमिहीन कृषकों को भी कृषि भूमि उपलब्ध हो सकें।
- **उचित मूल्य प्राप्त होना –** कृषि उत्पादन के क्रय विक्रय में सुधार किया जाना चाहिए। जिससे कृषकों को कृषि उत्पादन का उचित मूल्य प्राप्त हो सकें। इसके लिए सहकारी कृषि साख समितियॉ की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। गोदाम एवं यातायात के साधनों का उचित विकास किया जाना चाहिए।

- **कृषकों के शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था –** कृषक अभी भी परम्परागत ढंग से खेती करते है। कृषि के आधुनिक तरीके से खेती करने का प्रशिक्षण दिया जाना अति आवश्यक है। कृषकों को आधुनिक प्रशिक्षण के माध्यम से ही आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष

कृषकों के सामने खेती करने के लिए खाद, बीज, सिंचाई, उर्वरक, मजदूरी, महँगे कृषि यंत्र आदि साधनों का उपलब्ध होना अत्यन्त आवश्यक है। इन साधनों की उपलब्धि छोटे कृषकों के लिए कॉफी कठिन कार्य है। सरकार इन कृषकों को आवश्यकतानुसार कृषि ऋण उपलब्ध कराती है, ताकि कृषक कृषि कार्य हेतु प्रोत्साहित हो सकें किन्तु इन कृषकों को वित्त व्यवस्था का उतना लाभ प्राप्त नहीं हुआ, जितना की बडे भू स्वामी कृषकों को लाभ प्राप्त हुआ है। इसके लिए कृषि कार्य हेतु उचित निवेश एवं ऋण प्रवाह की दर को बडाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि सरकार द्वारा अनेक प्रयास करने के वावजूद सही मायने में पात्र कृषक ऋण सुविधाओं से वंचित है जबकि साधन सम्पन्न कृषक ऋण सुविधाओं का अधिक लाभ प्राप्त कर रहे है। वर्तमान में आज न तो कृषि क्षेत्र का भविष्य सुरक्षित दिख रहा है और न ही कृषि क्षेत्र के घटते महत्व के कारण खाघान्न सुरक्षा का भविष्य सुरक्षित दिख रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि मानसून का विफल होना, ऋणग्रस्तता, सिंचाई के साधनों का अभाव,महाजनों व साहूकारों के ऋण जाल आदि चुनौतियों गंभीर रुप धारण कर चुकी है, जब कि इन चुनौतियों का सामना करने के लिए प्र्याप्त उपायों का अभाव दिख रहा है। यदि इन समस्याओं एवं चुनौतियों का उचित समाधान नहीं किया गया, तो कृषि जैसा महत्वपूर्ण क्षेत्र एक घाटे का सौदा बनकर रह जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. सिंह एस.पी.'आर्थिक विकास एवं नियोजन'(भारतीय अर्थ व्यवस्था के संदर्भ में),एस. चन्द्र एण्ड कंपनी लिमिटेड रामनगर, नई दिल्ली 2005
2. आर.ए. दुबे, आर्थिक विकास एवं नियोजन, नेशनल पब्लिशर्स हाउस नई दिल्ली, 2006
3. एस.के.मिश्रा बी.के.पुरी, भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालय पब्लिसिंग हाउस 2007
4. अग्रवाल ए.एन. भारतीय अर्थव्यवस्था विकास पब्लिकेशन हाउस प्रा.लि. 2008
5. डॉ चतुर्भुज भारत की आर्थिक समस्यायें साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर 2007.08
6. सिंह बी.राजेन्द्र ग्रामों का आर्थिक पुनरुधार, साहित्य सम्मेलन प्रयोग 2008
7. सिंह व निगम, भारतीय ग्राम्य अर्थशास्त्र, नवयुग साहित्य सदन आगरा 2009
8. दन्त सुन्दरम, भारतीय अर्थव्यवस्था, एस.चन्द्र एवं क्र. न्यू दिल्ली 2009
9. डॉ शर्मा,डॉ रामरतन 'भारतीय अर्थव्यवस्था' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 2009
10. सिन्हा डॉ.वी.सी एवं सिन्हा, डॉ पुष्पा 'अर्थव्यवस्या' एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस, 2009 पेज नं. 53
11. कुमार सौरभ 'भारत में कृषि ऋण की चुनौतियां कुरुक्षेत्र नवम्गर 2014,पेज नं 30.31
12. मध्य प्रदेश संदेश।
13. मोदी डॉ.अनीता किसान हित के लिए प्रतिबद्ध बजट कुरुक्षेत्र अप्रैल 2017
14. भारतीय अर्थव्यवस्था – दत्त सुंदरम, एस चन्द्र दिल्ली।
15. भारतीय अर्थशास्त्र – एल. एल. सेठ
16. भारतीय अर्थशास्त्र –एम. एल. कोली।
17. भारतीय अर्थशास्त्र – डॉ शशिकिरण नायक ।
18. दैनिक समाचार, दैनिक भास्कर, राज एक्सप्रेस, पत्रिका।

❖◆❖